दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति का साहित्य : एक पुनर्मूल्यांकन

06-07 मार्च, 2025

आयोजक

हिंदी विभाग

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय

चेरी-मनातू, राँची-835222 (भारत)

मुख्य संरक्षक

प्रो. क्षिति भूषण दास

माननीय कुलपति

संरक्षक

श्री के.के.राव

कुलसचिव

अध्यक्ष

प्रो. रत्नेश विष्वक्सेन

विभागाध्यक्ष

संयोजक

डॉ. उपेन्द्र कुमार 'सत्यार्थी'

सहायक प्रोफ़ेसर

सह-संयोजक

डॉ. रवि रंजन कुमार

डॉ. जगदीश सौरभ

डॉ. तुलसीदास माझी

आयोजन समिति

डॉ. कोंचोक तासी, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, तिब्बती
डॉ. सुदर्शन यादव, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
डॉ. कलसंग वांगमो, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, तिब्बती
डॉ. जया शाही, सहायक प्रोफ़ेसर, प्रदर्शन कला विभाग
डॉ. अर्पणा राज, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, चीनी
डॉ. रश्मि वर्मा, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
डॉ. संदीप विश्वास, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, चीनी
श्री शशि कु. मिश्रा, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, कोरियन
श्री मुकेश कु. जायसवाल, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, कोरियन
डॉ. शाकिर तसनीम, सहायक प्रोफ़ेसर, प्रदर्शन कला विभाग
श्री सुशांत कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, चीनी
डॉ. शिल्पी राज, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. विजय कु. यादव, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. मनोहर कु. दास, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. अमृत कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
श्री नरेंद्र कुमार, जन संपर्क अधिकारी

छात्र समन्वय समिति

राहुल कुमार, सूरज रंजन, रवि रंजन,दीपक कुमार, सौरभ कुमार, प्रीति सिंह, अंशु प्रिया, चंदन कुमार सिंह, अभिषेक सिंह, रूमा कुमारी, सुनीता कच्छप, मनीष कुमार दुबे, रामश्याम कु. विश्वकर्मा

विश्वविद्यालय का परिचय

केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) 1 मार्च, 2009 को "नवाचार, रचनात्मक प्रयासों और विद्वतापूर्ण अन्वेषण को बढ़ावा देने, व्यक्तियों, राष्ट्र और दुनिया की शांति-समृद्धि हेतु, एक सजग समाज एवं प्रबुद्ध नागरिक के निर्माण करने" के दृष्टिकोण के साथ अस्तित्व में आया। यह विश्वविद्यालय झारखंड राज्य का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (एनईपी-2020) के तहत 21 एकीकृत स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम, शैक्षणिक सत्र 2024-25 में 12 स्नातकोत्तर और 20 डॉक्टरेट कार्यक्रम उपलब्ध करा रहा है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य बहु-विषयक शिक्षा, एक मजबूत चरित्र के निर्माण और मूल्य-आधारित पारदर्शी कार्य नैतिकता के पोषण के माध्यम से, प्रबुद्ध समुदाय के निर्माण, आमजन के समग्र विकास और आत्मनिर्भरता तथा रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देने हेतु परिवर्तन के एक प्रतीक के रूप में सेवा करना है। विश्वविद्यालय अधिगम के शुद्ध और अनुप्रयुक्त क्षेत्रों में शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार में उत्कृष्टता के वातावरण की संरचना करके इस उद्देश्य को प्राप्त करना चाहता है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य अधिगम की शाखाओं में यथोचित अनुदेशात्मक और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करके ज्ञान का प्रसार और विस्तार करना, अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत पाठ्यक्रमों के लिए विशेष प्रावधान नियत करना, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और अंतःविषयी अध्ययन और अनुसंधान में नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए उचित उपाय करना, देश के विकास के लिए जनशक्ति को शिक्षित और प्रशिक्षित करना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए उद्योगों के साथ संबंध स्थापित करना, सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के सुधार और लोगों के कल्याण, उनके बौद्धिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास पर विशेष ध्यान देना आदि है। यह विश्वविद्यालय झारखंड राज्य की राजधानी 'रांची' में स्थित है. यह शहर समुद्र तल से 2140 फीट की ऊंचाई पर 23.23 एन अक्षांश और 85.23 ई देशांतर पर स्थित है। इस विश्वविद्यालय का परिसर चेरी-मनातू गाँव के मध्य में स्थित है जो रांची रेलवे स्टेशन से लगभग 18 किलोमीटर और बिरसा मुंडा हवाई अड्डे से लगभग 30 किलोमीटर दूर है। यह परिसर आईटीबीपी से रांची रिंग रोड द्वारा जुड़ा है।

विभाग का परिचय

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना 18 जनवरी 2018 को हुई। विश्वविद्यालय का यह नवनिर्मित हिन्दी विभाग भाषा एवं साहित्य के उत्थान को लेकर कृत संकल्पित है और अपने बहुआयामी उद्देश्य को लेकर कटिबद्ध है। साहित्य की संस्कृति व चिंतन की मौलिकता, अभिव्यक्ति में तार्किकता और सामाजिक दायित्व की पहचान करने का संकल्प लेकर विभाग को स्थापित किया गया है। विभाग का उद्देश्य छात्रों एवं शोधार्थियों में साहित्य एवं समाज के प्रति उत्तरदायी एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना है। ज्ञानार्जन के अतिरिक्त रोजगार की दृष्टि से कौशल विकसित करना है। साहित्य की संस्कृति, चिंतन की मौलिकता, रचनात्मकता का विश्वास, अभिव्यक्ति में तार्किकता के साथ विनयशीलता और सामाजिक दायित्व की पहचान को मनुष्य होने की यात्रा से जोड़ने का संकल्प लेकर विभाग को स्थापित किया गया है और इसे ध्येय

बनाकर लक्ष्य में परिवर्तित करना ही काम्य है। विभाग का उद्देश्य छात्रों एवं शोधार्थियों में साहित्य एवं समाज के प्रति उत्तरदायी एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना है। ज्ञानार्जन के अतिरिक्त रोजगार की दृष्टि से कौशल विकसित करना प्रमुख है। साहित्यिक शोध, भाषा शिक्षण, अनुवाद, विदेशी हिंदी शिक्षण, पठकथा लेखन, प्रूफ़ रीडिंग, आदि विभागीय अध्ययन-अध्यापन के केंद्र में हैं।

संगोष्ठी की संकल्पना

कहते हैं कि पीड़ा सृजन का मूल है और क्रांति समाज की नींव. साहित्य एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें यह सब समाहित होता है पीड़ा, क्रांति, सृजन और समाज। इतिहास हमेशा वस्तुनिष्ठ होता है। अगर किसी युग की पीड़ा का सार समझना हो, उसे उसकी समग्रता में अनुभूत करना हो, तो उस युग की रचनाओं पर दृष्टि दौड़ानी चाहिए. प्रेमचंद हिंदी और फकीर मोहन सेनापति ओड़िआ कथा साहित्य के युग प्रवर्तक रचनाकार हैं। प्रेमचंद ने अपने मौलिक यथार्थवादी कथासाहित्य के द्वारा हिंदी साहित्य को एक नवीन अर्थवत्ता प्रदान की। इस तरह फकीर मोहन सेनापति ने उपन्यास और कहानियाँ का सृजन करके जीवन के प्रति एक मौलिक और सर्वथा नवीन दृष्टि ही प्रदान नहीं की अपितु ओड़िआ भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए भरसक प्रयत्न किये। प्रेमचंद का कथासाहित्य 20वीं सदी के भारतीय जनता की पीड़ा, त्रासदी और विरोध का दस्तावेज है। उनकी लेखनी जहां एक ओर नवजागरण को समाहित किए है, वहीं दूसरी ओर यह किसान-मजदूर वर्ग के समाजवादी संघर्ष से भी जुडती है। उन्होंने अपने कथासाहित्य के जरिये अंग्रेजी राज और सामंतवाद को चुनौती देकर औपनिवेशिक-सामंती व्यवस्था पर तीव्र प्रहार किया है। भारतीय नवजागरण, स्वतंत्रता आन्दोलन एवं कृषक-मजदूर वर्ग के जनवादी संघर्ष की समस्याएं तथा उपलब्धियां ही उनके कथासाहित्य की मुख्य अंतर्वस्तु हैं। फकीर मोहन सेनापति का कथासाहित्य 20वीं सदी के ओड़िशा के कृषकों की पीड़ा, त्रासदी, मजदूरों-साहूकारों, सरकारी कर्मचारियों के अत्याचार के साथ समाज में पनपने वाले एक नए शिक्षित मध्यवर्ग की मानसिकता का दस्तावेज है। प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन दोनों महान कथाकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जन-जीवन, संस्कृति तथा चेतना को रूपायित करते हुए उन्हें सारी दुनिया के सामने उपस्थित किया साथ ही भारतीय समाज में फैली रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास को दूर करके यथार्थ मानवमूल्यों की स्थापना की। दोनों अलग अलग भाषा क्षेत्र में एक ही युग में पैदा हुए, और अपनी अपनी भाषा में समान पीड़ा अभिव्यक्त करते हैं। अपने युग का राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव दोनों रचनाकारों पर समान रूप से पडा है। दोनों ने पराधीन भारत में निरीह जनता की पीड़ा को अच्छी तरह महसूस किया था। दोनों की रचनाओं में एक ही पीड़ा शब्द पाती है, एक ही बेचैनी और छटपटाहट ध्वनित होती है, एक ही भावना उत्कर्ष पाती है। दोनों में अंतर यह है कि प्रेमचंद ने जहां अपने कथासाहित्य में पीड़ित जनता की व्यथा को अधिक गहराई और विस्तृत रूप में व्यक्त किया है वहीं फकीर मोहन की रचनाओं में गहराई होने पर भी विस्तृत वर्णन नहीं है। इसका कारण दोनों रचनाकारों के भौगोलिक तथा सामाजिक परिवेश का अंतर है।

उपर्युक्त विवरण के आलोक में इस संगोष्ठी के माध्यम से प्रेमचंद और फकीर मोहन के साहित्य की एक तुलनात्मक परिचर्चा प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

मुख्य विषय से संबंधित अथवा किसी भी उप विषय पर शोध-पत्र आमंत्रित हैं।

विचार बिंदु

- भारतीय साहित्य की अवधारणा: फ़क़ीर मोहन सेनापति और प्रेमचंद
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के परिवेश का साहित्य पर प्रभाव
- मूल्य-दृष्टि के आईने में प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति का साहित्य
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य में किसान
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य में भारतीय संस्कृति
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के कथा-साहित्य में चित्रित समस्याएं और समाधान
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के कथा-साहित्य में नारी सशक्तीकरण
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के कथा-दृष्टि की प्रासंगिकता
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य का लोकतात्त्विक अध्ययन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के कथा-साहित्य में मध्यवर्ग
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य में सामंतवाद विरोधी संस्कृति
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य में सुधारवादी दृष्टिकोण

- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के पात्रों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की संभावना
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति की कहानियों में सामजिक यथार्थ और संवेदना
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति की कहानियों में भारतीय संस्कृति
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति की कहानियों में व्यक्त जीवन-दर्शन एवं मानव मूल्य
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चिंतन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के उपन्यासों के पात्रों के जीवन-दर्शन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के उपन्यासों का पुनर्मूल्यांकन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के उपन्यासों में समाज के बदलते रूप
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के उपन्यासों में युगीन चेतना : पुनर्मूल्यांकन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के अनुदित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के कथा-साहित्य में व्यंग्य
- भारतीय नवजागरण के सन्दर्भ में प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति का साहित्य
- आदर्श और यथार्थ के आलोक में प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति का साहित्य
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य में ग्राम-जीवन
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य का सांस्कृतिक मूल्य
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के साहित्य में राष्ट्रीय जागरण
- प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के नारी पात्र एवं नारी-संवेदना
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद और फ़क़ीर मोहन सेनापति के पत्रों की प्रासंगिकता

महत्वपूर्ण तिथियां:

शोध सारांश भेजने की तिथि :	15 फरवरी 2025
शोध सारांश स्वीकृति की तिथि :	20 फरवरी 2025
पंजीकरण की अंतिम तिथि :	01 मार्च 2025
सम्पूर्ण शोध आलेख भेजने की तिथि :	01 मार्च 2025

विशेष नोट : इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध सारांश (अधिकतम 400 एवं बीज शब्द अधिकतम 5 शब्द) और सम्पूर्ण शोध आलेख (अधिकतम 3000 शब्द) यूनिकोड फॉण्ट/Times New Roman में टंकित कर intseminarcujhindi2025@gmail.com ईमेल पर भेज दें। चयनित शोध आलेखों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। शोध आलेख केवल हिंदी और अंग्रेजी भाषा में स्वीकार्य होंगे।

ऑनलाइन पंजीकरण हेतु लिंक

https://forms.gle/az7Vb1buUEKfjqDB8

पंजीयन शुल्क

प्राध्यापकों के लिए- 1000/-
शोधार्थियों के लिए- 500/-
विद्यार्थियों के लिए- 250/-

ऑनलाइन पंजीकरण शुल्क जमा करने हेतु

Name of Account Holder: **Premchand aur Fakir Mohan senapati ka Sahitya**
Name of the Bank : **Punjab National Bank**
Branch Address: **Brambe**
Account No. : **7277002100000701**
IFSC Code : **PUNB0727700**
Swift Code : **PUNBINBBRAN**

पंजीयन के लिए संपर्क करें: +917992212855, +918076228928, +919170459152